उपसंहार

आधुनिक हिंदी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इन उपन्यासों के जरिए लेखक पीछड़े समाज में स्थित विभिन्न परिस्थितियों को सूक्ष्मता से अंकित करता है। विभिन्न समस्याओं के माध्यम से वहाँ की हर बात का स्पष्ट रूप से या हू-ब-हू चित्रण इसमें मिलता है। इन उपन्यासों को समाज का 'एक्स-रे' कहना उचित लगता है। अत: प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में हिमांशु जोशी के दो उपन्यासों की आँचलिकता को ही प्रमुख आधार बनाया है।

-

हिमांशु जोशी जी का जन्म पर्वतीय अंचल प्रदेश में हुआ है। उनका बचपन वहाँ बीता है। उनके पिताजी स्वातंत्र्य सेनानी थे इसी कारण उनकी जेल यात्राएँ होती रहती थीं। परिवार पर संकट आते रहते थे। वे भ्रातृप्रेम से वंचित थे तथा सात साल की आयु में पितृ प्रेम से भी वंचित हुए। पिताजी की मृत्यु के बाद माता तुलसीदेवी ने चालीस साल तक उनकी सेवा की। वे बचपन से ही कुछ बन दिखाने की इच्छा रखते थे तथा आँचलिक परिवेश और साहित्य से प्रभावित हैं। बचपन से उन्हें अनेक शौक हैं। उन्होंने तेरह-चौदह साल की उम्र में ही लिखना शुरू किया। अठारह वर्ष की उम्र में विवाह हुआ। उनके दो पुत्र नार्वे में अपना सांसारिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज उनका परिवार चार जनों का है। उसमें पत्नी, तीसरा बेटा असीत, उसकी पत्नी याने जोशी जी की बहू और वे स्वयं सम्मिलित हैं। आज वे साहित्य लेखन में इतने मग्न हैं कि बाकी शौक के लिए समय नहीं दे पाते हैं। वे एक घुमक्कड व्यक्ति हैं। अनेक देशों की सफल यात्राएँ उन्होंने की हैं। पर्वतीय अंचल प्रदेश में बचपन बिता और इसके पश्चात् का जीवन महागनर दिल्ली में व्यतीत कर रहे हैं। कुछ दिन अध्यापक की नौकरी की तो कुछ दिन पत्रकारिता में। आज तक उनके दो कविता संग्रह, पंद्रह कहानी संग्रह, सात उपन्यास, चार यात्रा वर्णन तथा दस बालोपयोगी रचनाएँ और कुछ अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। उनके सात उपन्यासों में से दो ही उपन्यास आँचलिक है - (1) अरण्य, और (2) कगार की आग।

'अरण्य' उपन्यास में पर्वतीय लोगों की व्यथा, वेदना, पीड़ा का वर्णन किया है। राजनीतिक षड्यंत्रों तथा सामाजिक पाखंडों पर ताना मारा है। सरकारी योजना, स्वातंत्र्योत्तर ग्राम योजना में आए परिवर्तन, नेता, अफसरों की गंदी वृत्ति, सरकारी मदद आदि को दर्शाने के लिए समाज जीवन का यथार्थ चित्रण किया है और आदमी की जिंदगी को ही कथानक का आधार बनाया है। विभिन्न समस्याएँ जैसे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को भी स्पष्ट रूप से दर्शाने का प्रयास

किया है। सामाजिक कुप्रथा, अंधविश्वास, परंपरा प्रिय समाज, अन्याय / अत्याचार, विवाह समस्याएँ, परिवार विघटन आदि का खुलकर चित्रण किया है। इसके साथ-साथ 'कगार की आग' उपन्यास में भी निम्न-मध्य वर्गीय संघर्ष तथा लुहारों-शिल्पकारों के माध्यम से जिंदगी का अनोखा ढंग दिखाने का प्रयास किया है। आर्थिक विपन्नावस्था के कारण उत्पन्न समस्याएँ तथा नारी के विविध रूपों पर प्रकाश डाला है। अमानवीय अत्याचार, भ्रष्टनीति, अंधश्रद्धा, शोषण, दरिद्रतापूर्ण स्थिति, विवाह पद्धतियाँ, समाज व्यवस्था का खोखलापन आदि पर करारा व्यंग्य किया है। अत: जोशी जी ने बड़ी सूक्ष्मता से अंचल प्रदेश का वर्णन किया है।

इसी कारण मुख्य रूप से अंचल का अर्थ समझना आवश्यक है। विभिन्न विद्वानों ने तथा कोशकारों ने अपनी-अपनी विशेष परिभाषा देने का प्रयत्न किया है। विद्वानों से ज्यादा कोशकारों की परिभाषाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। अंचल का निर्माण स्वत: होता है। उसमें समाज बिखरा हुआ मिलता है। उसकी अपनी सीमाएँ होती हैं। जो बातें एक अंचल प्रदेश में विशेष रूप से पायी जाती हैं वह किसी अन्य प्रदेश में देखने नहीं मिलती। यही उस प्रदेश की विशेषता होती है। अंचल के अनेक प्रकार माने जाते हैं जिसमें पहाड़ी अंचल, जन-जीवन अंचल, ग्रामांचल, सागरांचल, कमाऊ अंचल, बंजरभूमि तथा वन्य अंचल आदि का समावेश होता है। अनेक विद्वान अपनी-अपनी अलग विशेषता के कारण अंचल प्रदेश की विशेषता को ही प्रधानता देते हैं। आँचलिक उपन्यासों में तीव्र शोषण से पीड़ित एवं ग्रस्त समाज तथा व्यक्तियों के अस्थिर मूल्यों के साथ-साथ आस्थावादी और सामंतवादी जीवन का चित्रण होता है। इसी कारण आँचलिकता का महत्त्व काफ़ी बढ़ा है। शहरी और ग्रामीण अंचल में अंतर मिलता है फिर भी ग्रामांचल पर लिखी कृतियाँ अधिक मात्रा में श्रेष्ठ रही हैं। इसी कारण ग्रामांचल महत्त्वपूर्ण है। आँचलिक उपन्यासों में समाज में मिलनेवाली राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को विशेष रूप में चित्रित किया जाता है।

'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में जोशी जी ने हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय अंचल में बसे 'कनाली' और 'लर्धौन' गाँवों की व्यथा की कथा का वर्णन किया है। जिसमें भौगोलिक

वातावरण के साथ-साथ उसी क्षेत्र विशेष को कथानक का आँचलिक आधार माना है। आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की भरमार होती है फिर भी हर एक पात्र की अपनी-अपनी सत्ता एवं अपना अलग महत्त्व रखता है। ये पात्र आँचलिक जीवन में व्याप्त प्रवृत्तियों एवं विषमताओं का उद्‌घाटन करने में सहायक बने हैं और रूढ़ि-परंपरा के द्योतक भी लगते हैं। जोशी जी के दोनों आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की भरमार मिलती हैं। विभिन्न प्रकार के पात्रों के जरिए वहाँ की हर स्थिति का सूक्ष्मता से वर्णन करने में वे सफल हुए हैं। भाषा की सफलता की दृष्टि से ये दोनों उपन्यास सफलता की सीढ़ियाँ पार कर चुके हैं। वहाँ की भाषा, शैली, रहन-सहन, मुहावरें, कहावतें तथा प्रचलित लोकोक्तियाँ आदि को भी उपयोग में लाया है। उपन्यास की सफलता के लिए प्रकृति का काव्यात्मक वर्णन, प्रकृति का मानवीकरण, अलंकार तथा छोटे-छोटे संवाद और आँचलिक अपशब्दों का प्रयोग मिलता है। इन दोनों उपन्यासों में आँचलिक शब्दों के विभिन्न प्रकार भी मिलते हैं, जैसे - जुड़े शब्द, द्विरूक्ति शब्द, 'कर' प्रत्यय लगाकर आये शब्द और मूल आँचलिक शब्द आदि।

आँचलिक वातावरण को स्पष्ट करने के लिए जोशी जी ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक पृष्ठभूमियों के माध्यम से सरकारी अफ़सरों की खोखली न्याय व्यवस्था, पंचायत के पंचों की धोकेबाजी, वर्ग तथा जातिभावना, सामंती व्यवस्था, सरकारी योजना और मदद, अन्याय / अत्याचार आदि पर करारा व्यंग्य किया है। धार्मिकता की दृष्टि से देखा जाए तो अंधविश्वास, भूत-प्रेत, पूजा-पाठ, भगवान की कसम खाना, झाड-फूँक कराना, पुरोहिताई, परंपरा, अज्ञान आदि के लिए धार्मिकता का आधार लिया है। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत वहाँ की संस्कृति, उत्सव, त्यौहार, परंपरा, रीति, मेले आदि का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। इन उपन्यासों के लगभग सभी पात्र आँचलिक पात्रों के प्रतिनिधि बन कर आये हैं। इन पात्रों के माध्यम से उन्होंने प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का वर्णन किया है। जिसमें आर्थिक समस्या को प्रमुखता दी है। इसके साथ-साथ मकान, विवाह, अन्याय / अत्याचार, स्वार्थ, व्यसनाधीनता, अज्ञान / अशिक्षा, परिवार विघटन, वर्ग तथा जाति भावना आदि समस्याएँ सम्मिलित हैं। इन उपन्यासों में अधिक मात्रा में नारी विषयक समस्याओं का चित्रण मिलता है। समस्याओं को सजीव रूप प्रदान करने में लेखक सफल हुए हैं।

इन दो उपन्यासों में अधिकतर समानताएँ मिलती हैं। समानता इतनी है कि सिर्फ पात्रों के

नाम बदले हैं। कथानक का आधार, पात्र, पात्रों की भरमार, समस्याएँ, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमियाँ या वातावरण, भाषागत विशेषता, वर्णनात्मकता, संवाद, स्थानीय बोली का अधिक मात्रा में प्रयोग, युद्धवर्णन, पात्रों की परिवर्तित स्थिति का वर्णन, जीवन व्यापार, विवाह प्रकार, परंपराप्रिय समाज, कौतूहल तथा आश्चर्य की भावना का वर्णन, शोषण, अन्याय / अत्याचार, कुप्रथाओं का विरोध आदि अनेक बातों में समानता मिलती है। इसके साथ-साथ पहाड़ी प्रदेश में आम, बरगद, पिपल के पेड़ तथा जंगली हाथी होने का भी वर्णन मिलता है। इन सारी विशेषताओं के बावजूद भी इन उपन्यासों में वर्णित दो बातें असंगत लगती है। (1) 'अरण्य' उपन्यास का नायक मानिक घर छोड़ जाता है तो उसे उसके पिताजी की मृत्यु की खबर कौन पहुँचाता है ? (2) अरण्य उपन्यास का पात्र माधव पधान की पाँच पुत्रियाँ बताई है लेकिन सिर्फ तीनों के ही नाम मिलते हैं। आदि कमियाँ छोड़कर देखे तो ये उपन्यास पूर्णांचलिक हैं। जोशी जी की एक विशेषता रही है कि उन्होंने दोनों आँचलिक उपन्यासों का अंत पाठकों पर सौंपकर, पाठकों को सोचने के लिए विवश कर दिया है। इस प्रकार 'अरण्य' और 'कगार की आग' ये दोनों उपन्यास आँचलिक उपन्यास के तत्त्वों पर खरे उतरते हैं।

<u>अनुसंधान की उपलब्धियाँ</u> -

अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में प्राक्कथन में उठाये गए तीन प्रश्नों के उत्तर निम्नप्रकार से -

प्रश्न : (1) - हिमांशु जोशी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कितना है ?

(1) हिमांशु जोशी जी का बचपन पर्वतीय पहाड़ी अंचल में बीतने के कारण वहाँ की हर बात से वे परिचित है। इसी कारण वहाँ का हू-ब-हू वर्णन करने में वे सफल हुए हैं। उन्होंने स्वयं पारिवारिक संघर्ष तथा आर्थिक संकटों का सामना किया है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में जन्म होने के कारण अंग्रेजों के अन्याय अत्याचारों को देखा था। कम उम्र में ब्याह, जीवन संघर्ष, आर्थिक विपन्नावस्था तथा अंचल जीवन छोड़कर उन्नति हेतु महानगरीय जीवन में स्थलांतर करना आदि अनेक बातों का जिक्र दोनों आँचलिक उपन्यासों में अप्रत्यक्ष रूप में किया है। पिताजी स्वातंत्र्य सेनानी थे और उनसे स्वातंत्र्य संग्राम के कुछ पाठ वे सीखे थें। इसी कारण उनके दोनों उपन्यासों में युद्धवर्णन को भी सम्मिलित किया है। अत:उपर्युक्त उनके व्यक्तित्व की झलक उनके कृतित्व में मिलती है। इससे ज्ञात होता है कि उनके व्यक्तित्व का कृतित्व पर अधिक मात्रा में प्रभाव मिलता है।

प्रश्न : 2 - क्या, हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यास, आँचलिक उपन्यास के तत्त्वों पर खरे उतरते हैं ?

(2) 'अरण्य' और 'कगार की आग' ये दोनों उपन्यास आँचलिक उपन्यास के तत्त्वों पर खरे उतरते हैं। कथानक, आँचलिक पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, आँचलिक भाषा, वातावरण या पृष्ठभूमि तथा प्राकृतिक स्थिति के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का चित्रण दोनों उपन्यासों में सफलतापूर्वक मिलता है। अत: ये दोनों उपन्यास पूर्णांचलिक हैं।

प्रश्न : 3 - हिमांशु जोशी जी का आँचलिक उपन्यास लिखने में क्या उद्देश्य रहा है ?

(3) जोशी जी का जन्म स्वातंत्र्यपूर्व काल में हुआ है। इसी कारण अंग्रेजों के अत्याचार, सामंती वृत्ति के लोग, साहुकारी, जमींदारी से वे परिचित हैं। पिताजी स्वातंत्र्य सेनानी होने के कारण उन्होंने हर बात की जिज्ञासावश जानकारी हासिल की है। स्वातंत्र्य पूर्व भारत और स्वातंत्र्योत्तर भारत के अंतर को वे स्पष्ट करना चाहते हैं। उनका बचपन पर्वतीय अंचल में बीता है। आज भी पहाड़ी अंचल में स्थित लोगों पर जिसप्रकार स्वातंत्र्यपूर्व काल में अन्याय / अत्याचार होते थे ठीक उसी प्रकार का चित्र दिखाई देता है। इसी कारण पहाड़ी अंचल के समाज की व्यथा, वेदना, पीड़ा का प्रत्यक्ष रूप उसी अंचल की भाषा के जरिए पाठकों के सामने लाने के लिए इन दो उपन्यासों का निर्माण हुआ है। पूरे सामाजिक परिवेश तथा समस्याओं को दर्शाना भी उनका उद्देश्य रहा है। राजनीतिक षड्यंत्र, सामाजिक पाखंड, सरकारी योजनाएँ, सरकारी मदद , नेता, अफ़सरों की गंदी मनोवृत्ति आदि की पोल खोलना तथा वर्ग, जातिभावना, नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण आदि बातों को स्पष्टता से दर्शाने के लिए इन दो उपन्यासों का निर्माण हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर 'और एक भारत' दिखाने का उनका प्रयास रहा है।

<u>अनुसंधान की नई दिशाएँ</u> -

(1) हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों में चित्रित नारी।

(2) हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ।

उपर्युक्त विषयों पर भविष्य में शोधकार्य किया जा सकता है।

****